राम देवांतर उपासना भ्रान्ति

Dispelling the misconception that Lord Rama worshipped devatāntara

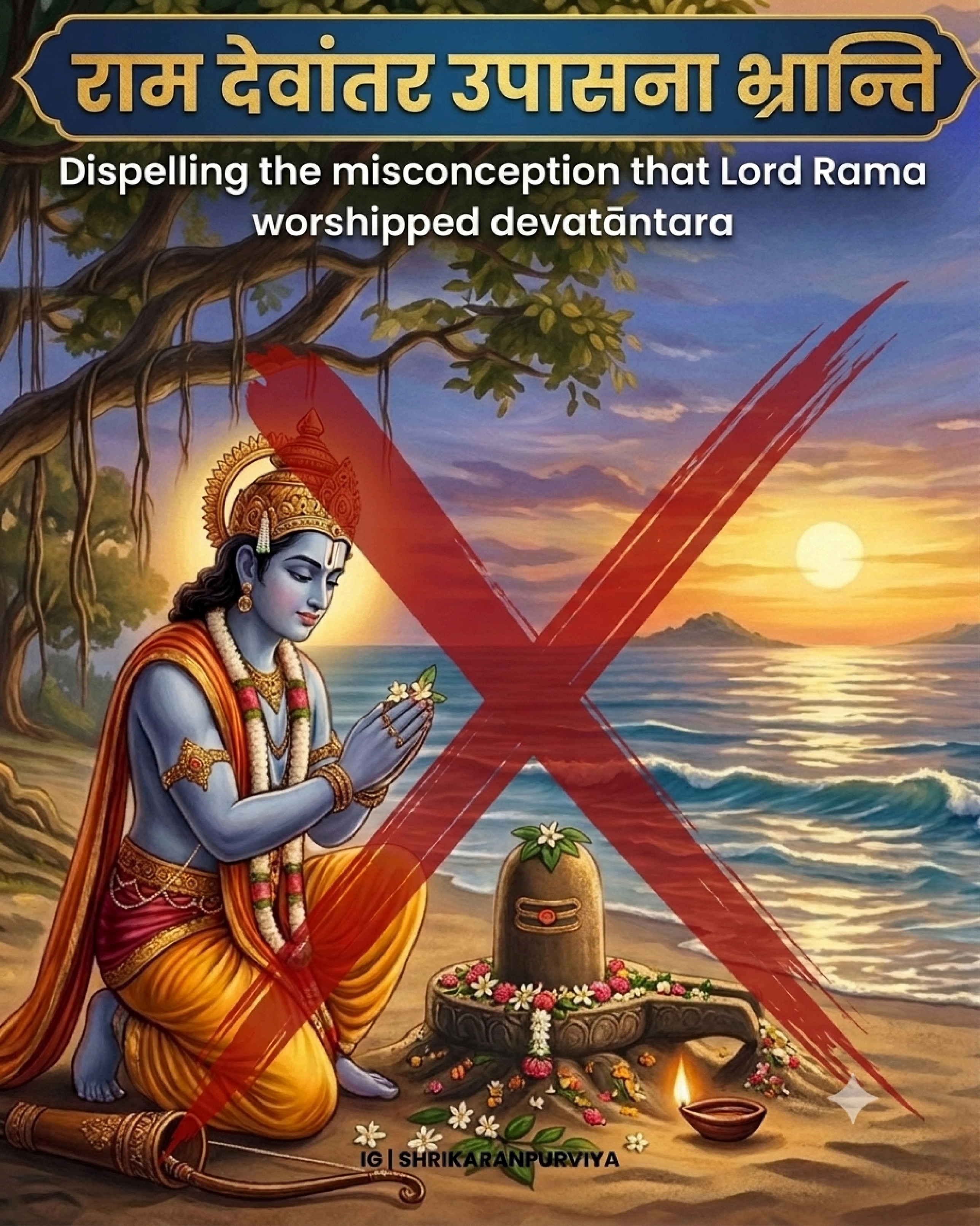

जय श्रीमन्नारायण! काफी व्यक्तियों को यह भ्रान्ति रहती है कि वाल्मीकि रामायण में भगवान राम ने देवतांतर उपासना (अन्य देवताओं की पूजा) की है, जैसे शिव आराधना, सूर्य आराधना आदि। आज इस पोस्ट के माध्यम से हम उन सभी की यह भ्रान्ति दूर करेंगे।

इस भ्रान्ति का समाधान करना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वाल्मीकि रामायण में वर्णन आता है, "रामो विग्रहवान् धर्मः" अर्थात् राम साक्षात् धर्म के स्वरूप हैं। राम जी ने जो किया वही धर्म है। अब इसके आधार पर, चूँकि श्री वैष्णव संप्रदाय में देवतांतर उपासना नहीं होती है, तो लोग उसे अधर्म बताते हैं और उन्हें राम-विरोधी कहते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्हें लगता है कि राम जी ने देवतांतर उपासना की थी और श्री वैष्णव संप्रदाय का आचरण उसके विरुद्ध है। जबकि सत्य यह है कि भगवान राम ने संपूर्ण वाल्मीकि रामायण में एक बार भी देवतांतर उपासना नहीं की है।

Jai Srimannarayana! Many people have the misconception that in the Valmiki Ramayana, Lord Rama worshipped other deities (Devatantar Upasana), such as Lord Shiva, Lord Surya, etc. Today, through this post, we will clear this misconception for everyone. Resolving this misconception is necessary because it is stated in the Valmiki Ramayana, "Ramo Vigrahavan Dharmah" (Rama is the personification of Dharma). Whatever Lord Rama did is considered Dharma. Now, based on this, since the Sri Vaishnava Sampradaya does not practice the worship of other deities, people label their practice as Adharma (unrighteous) and call them anti-Rama. This happens because they mistakenly believe that Lord Rama worshipped other deities and thus the Sri Vaishnava conduct is against Lord Rama's actions. However, the truth is that throughout the entire Valmiki Ramayana, Lord Rama did not worship any other deity even once.

IG| SHRIKARANPURVIYA

1. शिव उपासना भ्रान्ति

अत्र पूर्व महादेवः प्रसादमकरोद् विभुः

वाल्मीकि रामायण युद्धकाण्ड सर्ग 123

यहाँ 'महादेव' शब्द से औचित्य के कारण समुद्र के राजा (सागर) को कहा गया है, जो समुद्र के जल के अधिष्ठाता प्रभु हैं।
'प्रसादम् अकरोत्' का अर्थ है कि "मैं समुद्र को सुखा दूँगा"—ऐसा कहकर क्रोधित हुए मुझ पर (सागर ने) अपनी प्रसन्नता प्रकट की। अमरकोश के अनुसार "प्रसाद का अर्थ प्रसन्नता है।"
यहाँ 'महादेव' का अर्थ रुद्र नहीं है, क्योंकि उनके द्वारा पहले किसी प्रकार की प्रसन्नता (वरदान) देने की बात नहीं कही गई है। यहाँ तो केवल पहले घटित हुई बातों का ही कथन किया जा रहा है।

Here, based on the context, the word 'Mahadev' refers to the King of the Ocean (Sagar), who is the presiding lord of the ocean's waters.
The phrase 'Prasadam akarot' means that (the Ocean God) showed his favor upon me when I became enraged and said, "I will dry up the ocean." According to the Amarakosha, "Prasad means pleasure or favor."
Here, 'Mahadev' does not mean Rudra (Shiva), because there is no prior mention of him granting any kind of favor (boon). Only the events that have already occurred are being narrated here.

अब अगर कोई व्यक्ति यह कहे राम जी पिसले कल्प का बात कर रहे है तो उचित नहीं होगा क्योंकि भगवान राम खुद कहते है "मैं स्वयं को एक सामान्य मनुष्य मानता हूँ" कहते हैं, उनके द्वारा सुग्रीव आदि की उपस्थिति में अपने विष्णु-अवतार होने का संकेत देने वाले पिछले कल्प के वृत्तांत को प्रकट करना अनुचित है।

अब अगर कोई व्यक्ति यह कहे अन्य पुराणों में रामजी के द्वारा सेतु निर्माण एवं लिंग स्थापना पूजन का वर्णन मिलता है इसलिए यह हमे महादेव से शिव को लेना चाहिए

इतिहास (रामायण) को पुराणों से श्रेष्ठ और बलवान माना गया है—इसके व्यापक स्वीकार (परिग्रह), ग्रंथ की श्रेष्ठता तथा "इतिहास-पुराणों में यह पाँचवाँ है" इत्यादि वाक्यों में इतिहास का पहले प्रयोग होने के कारण यह अधिक आदरणीय है। रामायण को वेदमय कहा गया है और यह ब्रह्मा जी के वरदान पर आधारित होने के कारण अत्यंत प्रबल है। इतिहास के विरुद्ध कोई घटना जाए तो वह प्रमाण नहीं होता रामायण (इतिहास) के विरोध में आने वाले तामस पुराणों के वचन प्रमाण नहीं माने जा सकते। इसके अलावा, पुराणों का मुख्य उद्देश्य सृष्टि की रचना (सर्ग-प्रतिसर्ग) आदि का वर्णन करना है, इतिहास की तरह केवल पुरानी वास्तविक घटनाओं (पुरावृत्त) को जस का तस कहना उनका मुख्य तात्पर्य नहीं होता।

अथवा उडारि आदि प्राचीन टीकाकारों का कहना है कि इस सर्ग में श्लोक अक्सर आगे-पीछे हो गए हैं। यदि ऐसा है, तो इस श्लोक को 'मन्दोदरी...' वाले श्लोक के बाद पढ़ा जाना चाहिए। और वैसी स्थिति में 'महादेव (महान देव यानी परम पूज्य) का प्रसाद' अपने पिता (दशरथ जी) के दर्शन पाना ही होगा। इसीलिए आगे चलकर भरत के पास हनुमान जी को भेजने के अवसर पर श्रीराम स्वयं कहेंगे—"महादेव (पिता दशरथ या ईश्वर) की कृपा से मेरा अपने पिता से मिलन हुआ।" संक्षेप में यह समझना चाहिए कि अन्य पुराणों के वचन केवल उस स्थान की महिमा (माहात्म्य) बढ़ाने के लिए कहे गए हैं।

Kalpa (Aeon):**
If someone argues that Lord Rama is talking about a previous *Kalpa*, this would be inappropriate. Since Lord Rama explicitly states, "I consider myself an ordinary human being," it would be highly improper for him to reveal events from a past *Kalpa* in the presence of Sugriva and others, as doing so would disclose his true identity as an incarnation of Lord Vishnu.
* **The Argument of Other Puranas:**
If someone argues that other Puranas mention Lord Rama building the bridge (Setu) and establishing/worshipping the Shiva Lingam, and therefore the word "Mahadeva" here must refer to Lord Shiva, this too is incorrect.
* **The Supremacy of *Itihasa* (Ramayana) over Puranas:**
Itihasa (which includes the Ramayana) is considered superior and more authoritative than the Puranas. It commands greater respect due to its widespread acceptance, the inherent greatness of the text, and because the word '*Itihasa*' is placed first in Vedic phrases like "*Itihasa-Purana is the fifth Veda*."
* **Ramayana as the Ultimate Evidence (*Pramana*):**
The Ramayana is described as the very essence of the Vedas (*Vedamaya*) and holds immense authority because it is based on the direct boon of Lord Brahma. If any event contradicts *Itihasa*, it cannot be accepted as valid evidence (*Pramana*). Therefore, the statements of *Tamasic* Puranas that contradict the Ramayana cannot be considered

authentic.

* **The Core Purpose of Puranas vs. Itihasa:***
Furthermore, the primary focus of the Puranas is to describe the creation and dissolution of the universe (*Sarga* and *Pratisarga*). Unlike *Itihasa*, their main intent is not merely to narrate ancient historical events (*Puravritta*) exactly as they occurred.
* **Misplaced Verses (According to Ancient Commentators):**
Alternatively, ancient commentators like Udari state that the verses (*shlokas*) in this specific canto (*Sarga*) have often been displaced or jumbled. If we accept this, the verse in question should actually be read after the verse starting with *"Mandodari..."*. In that specific context, "the grace of Mahadeva (meaning a great, highly revered deity)" refers solely to Lord Rama getting the vision of his deceased father (King Dasharatha).
* **Conclusion & Context of Lord Rama's Words:**
This is why, later on, on the occasion of sending Hanuman to Bharata, Sri Rama himself says: *"By the grace of Mahadeva (meaning his father Dasharatha or the Supreme Lord), I was reunited with my father."*
In Summary: It should be understood that the descriptions found in other Puranas regarding Shiva worship are simply meant to glorify the significance (*Mahatmya*) of those specific pilgrimage sites, rather than being factual accounts of Lord Rama's actions in the Valmiki Ramayana.

2. समुद्र देवांतर उपासना भ्रान्ति

अब काफी व्यक्ति यह कहेंगे मान लिया हमने रामजी ने शिव उपासना नहीं करी किंतु उन्होंने समुद्र की तो उपासना करी है तो यह देवांतर उपासना नहीं होगा , तो उनकी इस भ्रान्ति का समाधान वाल्मीकि रामायण से ही हो जाता है ,

खानितः सगरेणायमप्रमेयो महोदधिः
कर्तुमर्हति गमस्य ज्ञातेः कार्यं महोदधिः ॥6.19.31 ॥

यह अथाह महासागर राजा सगर द्वारा खुदवाया गया था । श्रीरामचन्द्रजी सगरके वंशज हैं इसलिए, इस महासागर को अपने सम्बंधी राम का कार्य करना चाहिए।"

इस श्लोक से हमे ज्ञात होता सागर रामजी के पूर्वज है इसलिए उनकी उपासना देवांतर उपासना नहीं होगा रामजी के लिए

Now, many people might argue: 'Even if we accept that Lord Rama did not worship Lord Shiva, He did worship the ocean. So, wouldn't that be considered Devatantara Upasana (worship of another deity)?' The resolution to this misconception is found within the Valmiki Ramayana itself:

खानितः सगरेणायमप्रमेयो महोदधिः ।
कर्तुमर्हति रामस्य ज्ञातेः कार्यं महोदधिः ॥ 6.19.31 ॥

"This unfathomable ocean was excavated by King Sagara. Shri Ramachandra is a descendant of Sagara; therefore, this great ocean should accomplish the work of its relative, Rama." From this verse, we understand that the ocean was connected to Lord Rama's ancestors. Therefore, for Lord Rama, worshipping the ocean would not be considered Devantara Upasana

IG | SHRIKARANPURVIYA

3. सूर्य देवता की उपासना भ्रान्ति

काफी व्यक्तियों को लगता भगवान राम ने आदित्य हृदय स्तोत्र में सूर्य देवता की उपासना करी है
लेकिन यह भी उन व्यक्तियों की भ्रान्ति है क्योंकि उनको बता देना चाहते आदित्य हृदय स्तोत्र वाल्मीकि रामायण का संभवतः नहीं है क्योंकि यह सर्ग (आदित्य हृदय स्तोत्र) रामायण की बहुत सी पांडुलिपियों (कोशों) में नहीं मिलता है। वाल्मीकि रामायण के सबसे प्राचीन टीकाकार 'उडारि' ने भी इसकी व्याख्या नहीं की है। उडारि ने इस (युद्ध) कांड में कुल 130 सर्ग गिने हैं। यदि वे इस सर्ग को भी मूल रामायण का हिस्सा मानते, तो उनके द्वारा गिने गए सर्गों की संख्या 131 होनी चाहिए थी।
ग्रंथ के आरंभ से जिस 'नारायण की सर्वोच्चता' का प्रतिपादन हुआ है, एवं अन्य किसी देवता की सर्वोच्चता का प्रतिपादन नहीं हुआ, यहाँ अचानक 'सूर्य की सर्वोच्चता' का वर्णन उसके विरुद्ध प्रतीत होता है जिससे इसके बाद में जोड़े जाने का संकेत मिलता है ।

"Many people believe that Lord Rama worshipped the Sun God in the *Aditya Hridaya Stotra*. However, this is a misconception. We would like to point out that the *Aditya Hridaya Stotra* is likely not an original part of the Valmiki Ramayana, as this specific canto (sarga) is missing from many manuscripts.
The oldest commentator on the Valmiki Ramayana, 'Udari', also did not provide any commentary on it. Udari counted a total of 130 cantos in this (Yuddha) Kanda. If he had considered this canto to be a part of the original Ramayana, his count would have been 131 cantos.

Furthermore, from the very beginning of the text, the 'supremacy of Narayana' has been consistently established, and the supremacy of no other deity has been propounded. The sudden assertion of the 'supremacy of Surya' here appears to contradict the central theology of the epic, which strongly indicates that this section was added later as an interpolation."

अगर कोई व्यक्ति कहे हम इस सर्ग को प्रक्षिप्त नहीं मानते तभी यहा सूर्य का उपासना नहीं है महर्षि बादरायण ने 'ब्रह्मसूत्र' (वेदान्त) में स्पष्ट किया है कि जिस प्रकार 'मधुविद्या' में सूर्य की सर्वोच्चता बताने के बावजूद उसका वास्तविक तात्पर्य सूर्य के भीतर स्थित (अंतर्यामी) परमात्मा से है; ठीक उसी प्रकार, इस आदित्य हृदय स्तोत्र का तात्पर्य भी सूर्य के भीतर स्थित अंतर्यामी परमात्मा (नारायण) की स्तुति से है। इसलिए यह पूर्णतः संगत है। रामायण के आरंभ से लेकर अंत तक भगवान नारायण ही परम तत्त्व हैं, यह निर्विवाद है और पहले ही विस्तार से सिद्ध किया जा चुका है। स्तोत्र में आया "ब्रह्मेशानाच्युतेशाय" (ब्रह्मा, शिव और विष्णु के स्वामी) कथन भी उचित है, क्योंकि इन तीनों मूर्तियों (त्रिदेवों) की उत्पत्ति मूल परमात्मा (नारायण/ब्रह्म) से ही हुई है। ,ब्रह्मसूत्र के 1.2.17 आदि शंकराचार्य तक सूर्य देवता को जीव स्वीकार करते है ।

"Even if someone argues that they do not consider this canto to be an interpolation, it still does not constitute the worship of the Sun God. Maharishi Badarayana has clarified in the *Brahma Sutras* (Vedanta) that just as in the *Madhu Vidya*, despite asserting the supremacy of the Sun, the actual implication refers to the Supreme Lord (*Antaryami* or the Indweller) residing within the Sun; .

IG | SHRIKARANPURVIYA

in exactly the same way, the true essence of this *Aditya Hridaya Stotra* is also the glorification of the indwelling Supreme Lord (Narayana) situated within the Sun. Therefore, this is completely consistent

> From the beginning to the end of the Ramayana, Lord Narayana alone is the Supreme Reality. This is indisputable and has already been established in detail. The statement *'Brahmeshanachyuteshaya'* (the Lord of Brahma, Shiva, and Vishnu) mentioned in the stotra is also appropriate, because all three of these forms (the Trinity) have originated from the original Supreme Lord (Narayana/Brahman).

> Furthermore, in the context of *Brahma Sutras* 1.2.17, even Adi Shankaracharya accepts the Sun deity as a *Jiva*

बृहदारण्यक उपनिषद (Brihadaranyaka Upanishad)3-7-13

जो आदित्य (सूर्य) में निवास करता है, जो आदित्य के भीतर है, जिसे आदित्य नहीं जानता, जिसका शरीर आदित्य है, और जो भीतर से आदित्य को नियंत्रित करता है — वही तुम्हारा आत्मा है, अंतर्यामी है, और अमर है।"

He who dwells in आदित्य (the sun), who is wihtin it, whom the sun does not know, for whom the sun is the body and who controls the sun from within, he is your atman, the inner ruler, the immortal

इन सब प्रमाणों से सिद्ध होता है आदित्य हृदय स्तोत्र में सूर्य के अंतर्यामी नारायण की बात है

All these evidences prove that Aditya Hridaya Stotra talks about Narayana, the inner controller of the Sun.

IG | SHRIKARANPURVIYA

4. अन्य देवता उपासना भ्रान्ति

अब बहुत से व्यक्ति कहेंगे कि राम जी ने तो श्राद्ध, पिंडदान, तर्पण आदि पितृ कर्म किए एवं वास्तु शांति, अश्वमेध यज्ञ भी किया, क्या यह देवांतर उपासना में नहीं आएंगे?
तो इसका उत्तर यह है कि श्राद्ध, पिण्डदान आदि पितरों के लिए किया जाता है जो कि हमारे पूर्वज हैं, इसलिए यह करना कोई देवांतर उपासना नहीं है। पितरों के प्रति हम कृतज्ञता दिखाते हुए उनको पितृ रूपी जनार्दन मानकर उपासना की जाती है। यह भगवान नारायण का ही आज्ञा-कैंकर्य है।
और वास्तु शांति, यज्ञ आदि कर्मों का फल नारायण को ही जाता है, क्योंकि यज्ञ नारायण ही हैं। शास्त्रों में बताया गया है कि अग्नि परमात्मा का मुख है, इसलिए किसी भी देवता के मंत्र की आहुति दें, उसका फल भगवान नारायण को ही जाता है। इसलिए यह देवांतर उपासना नहीं होती

"Now, many people might argue that Lord Rama performed ancestral rites (*Pitri Karma*) such as Shraddha, Pind Daan, and Tarpan, as well as rituals like Vastu Shanti and Ashwamedha Yagya—wouldn't these be considered *Devatantara Upasana* ?
The answer to this is that Shraddha, Pind Daan, and similar rituals are performed for our *Pitrus* (ancestors), who are our forefathers; therefore, performing them is not *Devantar Upasana*. To express our gratitude towards our ancestors, we worship them by considering them as Lord Janardan in the form of our ancestors. This is simply an act of obedient service to the command (*Agya-Kainkarya*) of Lord Narayana.

Furthermore, the fruits of rituals like Vastu Shanti and Yagyas go directly to Lord Narayana, because Narayana Himself is the Yagya. It is stated in the scriptures that Agni (fire) is the mouth of the Supreme Lord. Therefore, no matter which deity's mantra is used to offer oblations, the ultimate fruit goes only to Lord Narayana. Hence, this does not constitute *Devatantara Upasana

अब कही व्यक्ति कहेंगे कि वाल्मीकि रामायण के अलावा अन्य रामायण में तो रामजी के देवांतर उपासना की है तो उसके आधार पर रामजी का देवांतर उपासना सिद्ध नहीं होगा - इस विषय पर शंकर संप्रदाय के करपात्री महाराज भी कहते है रामायण मीमांसा में अन्य रामायण जब तक ही प्रमाण है जब तक वह वाल्मीकि रामायण से विरोधाभास नहीं करती, इसलिए अन्य रामायण अप्रमाणिक है प्रमाण की दृष्टि से , हमारी वैष्णव संप्रदाय में भी सिर्फ वाल्मीकि रामायण ही प्रमाण है ।

"Now, some people might argue that in versions of the Ramayana other than the Valmiki Ramayana, Lord Rama is depicted worshiping other deities (*Devatantara Upasana*). However, Rama's worship of other deities cannot be proven on that basis. On this matter, shankar sampradaya Karpatri Maharaj also states that other Ramayanas are considered authoritative (*Praman*) only as long as they do not contradict the Valmiki Ramayana. Therefore, from an evidentiary perspective, other Ramayanas are unauthoritative." In our vaishnav sampradaya only valmiki considered as praman

IG | SHRIKARANPURVIYA

श्रीमते रामानुजाय नमः

इस लेख में अधिकतर जो भी कुछ लिखा वह सब दास ने अपने पूर्वाचार्य श्री जगद्गुरु गोविंदराज स्वामी जी का जो वाल्मीकि रामायण पर भूषण भाष्य है उससे लिया बाकी तोड़ा सा दास ने आचार्यों की कृपा से लिखा है
आशा है इस लेख को पढ़ने के बाद बहुत व्यक्तियों का भ्रान्ति समाप्त हो गई होगी बाकी जो मूर्ख होते जो मंदबुद्धि होते ऐसे व्यक्तियों से स्मृतियों में संवाद करने का तक निषेध क्योंकि इनको कोई नहीं समझा सकता

This servant has derived most of this article from Sri Jagadguru Govindaraja Swami's 'Bhushan Bhashya' on the Valmiki Ramayana, adding a little by the grace of the Acharyas. I hope this clears many misconceptions. However, the Smritis forbid debating with the foolish and ignorant, as they simply cannot be convinced

ADIYEN KRISHNMOHANDAS

Follow @shrikaranpurviya for more detailed knowledge about dharmaśāstras

IG | SHRIKARANPURVIYA